1 Question: define Social Contract theory (Grotius, Hobbs, Lock, Rousseau)?

Answer:

📌 सामाजिक संविदा सिद्धांत (Grotius, Hobbes, Locke, Rousseau)

✨ परिचय

सामाजिक संविदा सिद्धांत राजनीतिक दर्शन का वह आधार है जो यह स्पष्ट करता है कि मनुष्य प्राकृतिक अवस्था से निकलकर किस प्रकार सामाजिक समझौते द्वारा राज्य, शासन एवं विधि की स्थापना करता है। इस सिद्धांत के अनुसार सत्ता की वैधता जनता की सहमति एवं सामूहिक अनुबंध पर आधारित होती है।

1️⃣ ह्यूगो ग्रोशियस (Hugo Grotius)

ग्रोशियस को आधुनिक अंतरराष्ट्रीय विधि का जनक माना जाता है। उसके अनुसार मनुष्य स्वभाव से तर्कसंगत एवं सामाजिक है, अतः वह शांतिपूर्ण जीवन एवं व्यवस्था बनाए रखने हेतु स्वेच्छा से संविदा में प्रवेश करता है। राज्य की सत्ता जनता की सामूहिक सहमति से उत्पन्न होती है तथा उद्देश्य समाज में न्याय एवं सद्भाव स्थापित करना है।

2️⃣ थॉमस हॉब्स (Thomas Hobbes)

हॉब्स ने प्राकृतिक अवस्था को "एकाकी, निर्धन, घृणित, क्रूर एवं अल्पजीवी" बताया, जहाँ जीवन निरंतर भय और संघर्ष से घिरा था।
व्यक्ति अपने जीवन रक्षा के अतिरिक्त सभी प्राकृतिक अधिकार एक सर्वशक्तिमान शासक (Leviathan) को सौंप देता है।
यह संविदा एकतरफा है—जनता शासक के प्रति बाध्य, परंतु शासक जनता के प्रति उत्तरदायी नहीं। हॉब्स पूर्ण निरंकुश सत्ता का समर्थक था।

3️⃣ जॉन लॉक (John Locke)

लॉक के अनुसार प्राकृतिक अवस्था शांतिपूर्ण थी लेकिन सुरक्षा का अभाव था।
जीवन, स्वतंत्रता एवं संपत्ति की सुरक्षा हेतु व्यक्ति सामाजिक संविदा करता है और शासन को अधिकार प्रदान करता है।
शासन जनता के प्रति उत्तरदायी है और यदि वह अधिकारों का उल्लंघन करे तो जनता को विद्रोह तथा शासन परिवर्तन का अधिकार प्राप्त है। लॉक संवैधानिक शासन एवं सीमित सत्ता का समर्थक था।

4️⃣ जीन जैक रूसो (Rousseau)

रूसो का प्रसिद्ध कथन है— "मनुष्य जन्म से स्वतंत्र है, परंतु सर्वत्र जंजीरों में जकड़ा हुआ है।"
उसने **सामान्य इच्छा (General Will)** और **प्रत्यक्ष जनसत्ता** का समर्थन किया।
कानून जनता की सामूहिक इच्छा का प्रतीक होना चाहिए, न कि किसी शासक की निजी इच्छा का। रूसो लोकतांत्रिक शासन, जनसहभागिता एवं समानता का प्रबल समर्थक था।

✨ निष्कर्ष

सामाजिक संविदा सिद्धांत आधुनिक लोकतंत्र, जनसत्ता, उत्तरदायी शासन एवं विधि के शासन (Rule of Law) का दार्शनिक आधार प्रस्तुत करता है।
इसकी मूल धारणा यह है कि राज्य एवं सत्ता का जन्म जनता की सहमति से हुआ है और वही सत्ता की वैधता का अंतिम स्रोत है।

**********==========**********

2 Question: Command theory (Austin)?

Answer: 📌 **आदेश सिद्धांत (Command Theory – John Austin)**

✨ परिचय

जॉन ऑस्टिन विधिक प्रत्यक्षवाद (Legal Positivism) का प्रमुख प्रवर्तक था। उसने कानून को नैतिकता, न्याय, धर्म एवं प्राकृतिक अधिकारों से अलग कर वैज्ञानिक ढंग से परिभाषित करने का प्रयास किया। ऑस्टिन के अनुसार कानून का आधार **सत्ता का आदेश एवं राज्य द्वारा दिए गए दंड का भय** है।

📌 ऑस्टिन के अनुसार कानून की परिभाषा

ऑस्टिन के अनुसार—
"कानून संप्रभु का आदेश है, जिसे भंग करने पर दंड का भय हो।"

उसने स्पष्ट किया कि कानून किसी नैतिक सिद्धांत पर आधारित नहीं, बल्कि शासक के आदेश के रूप में मान्य होता है।

1️⃣ आदेश (Command)

कानून शासक अथवा संप्रभु द्वारा दिया गया आदेश है।
आदेश के तीन मुख्य तत्व हैं—

- **आदेश** (Command)
- **कर्तव्य** (Duty)

- **दंड / प्रतिबंध** (Sanction)

अर्थात् आदेश का पालन न करने पर दंड का प्रावधान ही उसे कानून बनाता है।

2️⃣ संप्रभुता (Sovereignty)

ऑस्टिन के अनुसार संप्रभु वह है—

- जिसकी आज्ञा का अधिकांश समाज निरंतर पालन करता है
- जो स्वयं किसी उच्चतर सत्ता के प्रति बाध्य नहीं है

संप्रभु की आज्ञा अंतिम, सर्वोच्च और बाध्यकारी है।

3️⃣ कर्तव्य (Duty)

जब संप्रभु आदेश देता है तो प्रजा के लिए उसका पालन करना **कानूनी कर्तव्य** बन जाता है।
इस कर्तव्य को तोड़ने पर व्यक्ति दंड का पात्र बनता है।

4️⃣ दंड / प्रतिबंध (Sanction)

ऑस्टिन का मानना है कि यदि आदेश के उल्लंघन पर दंड न हो तो वह कानून नहीं कहलाता।
दंड ही वह तत्व है जो आदेश को बाध्यकारी बनाता है।

5️⃣ कानून और नैतिकता का पृथक्करण

ऑस्टिन ने पहली बार स्पष्ट रूप से कहा कि—

- कानून क्या है (What Law *Is*)
- और कानून क्या होना चाहिए (What Law *Ought to Be*)

दोनों अलग-अलग हैं।
कानून नैतिकता पर निर्भर नहीं, बल्कि सत्ता के आदेश से बनता है।

✨ ऑस्टिन की आलोचना

ऑस्टिन के आदेश सिद्धांत पर निम्न आलोचनाएँ की गई—

1. **लोकतांत्रिक शासन की उपेक्षा** : संप्रभु को निरंकुश माना, जबकि आधुनिक राज्य लोकतांत्रिक हैं।

2. **न्यायपालिका की भूमिका का अभाव** : न्यायालयों द्वारा विकसित विधि (Judge-made law) भी कानून है, जबकि ऑस्टिन इसे मान्यता नहीं देता।
3. **आधुनिक संवैधानिक ढाँचे से असंगत** : संविधान संप्रभु से भी उच्च है, जिसे ऑस्टिन स्वीकार नहीं करता।
4. **अंतरराष्ट्रीय विधि की उपेक्षा** : अंतरराष्ट्रीय कानून में प्रतिबंधों का कठोर स्वरूप नहीं होता, फिर भी वह मान्य कानून है।

✨ निष्कर्ष

ऑस्टिन का आदेश सिद्धांत विधिक प्रत्यक्षवाद के विकास में मील का पत्थर है। उसने कानून को नैतिकता से अलग कर राज्य की शक्ति एवं आदेश पर आधारित वैज्ञानिक परिभाषा दी। यद्यपि आधुनिक संवैधानिक लोकतंत्र में संप्रभुता बहुआयामी हो गई है, फिर भी ऑस्टिन का सिद्धांत विधि के स्वरूप, स्रोत एवं बाध्यकारी तत्व को समझने का आधार प्रदान करता है।

**********==========**********

3 Question: Pure theory of law & Normative Science (Kelson)?

Answer: 📌 **शुद्ध विधि सिद्धांत एवं मानक विज्ञान (हांस केल्सन)**

✨ परिचय

हांस केल्सन आधुनिक विधिक प्रत्यक्षवाद का सबसे प्रभावशाली प्रवर्तक माना जाता है। उसने कानून को नैतिकता, समाजशास्त्र, राजनीति, मनोविज्ञान तथा धर्म से पूर्णतः अलग कर एक **वैज्ञानिक विधि सिद्धांत** विकसित किया, जिसे उसने **शुद्ध विधि सिद्धांत (Pure Theory of Law)** नाम दिया।
केल्सन का मुख्य उद्देश्य था कि कानून को केवल **कानून** के रूप में समझा जाए, न कि उसकी अच्छाई-बुराई, नैतिकता, न्याय या उद्देश्य के आधार पर।

📌 1. शुद्ध विधि सिद्धांत का मूल आधार

केल्सन के अनुसार:

- कानून का अध्ययन केवल **मानक विधिक नियमों (Norms)** के आधार पर किया जाना चाहिए
- कानून का विश्लेषण नैतिक एवं सामाजिक मूल्य से मुक्त होना चाहिए
- यह सिद्धांत **वर्णनात्मक (Descriptive)** नहीं, बल्कि **अनुशासनात्मक (Normative)** विज्ञान है

अर्थात् कानून का संबंध **"क्या होना चाहिए" (Ought to be)** से नहीं, बल्कि **"क्या है" (What Law is)** से है।

📌 **2. मानक विज्ञान (Normative Science)**

केल्सन ने विधि को **मानक विज्ञान** कहा।

- मानक (Norms) वह नियम हैं जो **कर्तव्य (Duty)** और **अनुपालन** का आदेश देते हैं।
- कानून एक **व्यवस्थित मानक संरचना** है, जिसकी प्रत्येक सीढ़ी ऊपर के नियम से वैधता प्राप्त करती है।

अर्थात् कानून वह आदेश है जो पालन का निर्देश देता है, और उल्लंघन पर प्रतिबंध (Sanction) लागू करता है।

📌 **3. ग्रुंडनॉर्म (Grundnorm) – मूल मानक**

केल्सन के सिद्धांत का सबसे महत्वपूर्ण तत्व है **Grundnorm** अथवा **मूल मानक**।

- यह वह **परम मानक** है जिससे सभी विधिक मानक वैधता प्राप्त करते हैं।
- संविधान इस मूल मानक का सर्वोच्च रूप है।
- ग्रुंडनॉर्म किसी अन्य नियम से प्रमाणित नहीं होता, बल्कि वही अन्य नियमों को वैध्यता प्रदान करता है।

अर्थात् पूरे विधिक ढाँचे की नींव **एक सर्वोच्च मानक** पर आधारित है।

📌 **4. पिरामिड संरचना (Hierarchy of Norms)**

केल्सन ने कानून को **नियमों की परतदार संरचना** या **पिरामिड** के रूप में समझाया—

1. **ग्रुंडनॉर्म (Constitution / Basic Norm)**
2. **विधायी नियम (Legislative Norms)**
3. **कार्यपालिक नियम (Executive Norms)**
4. **न्यायिक नियम (Judicial Norms / Decisions)**
5. **प्रशासनिक नियम (Subordinate Legislation)**

प्रत्येक निम्नतर नियम ऊपर के नियम से वैधता प्राप्त करता है।

📌 **5. कानून और नैतिकता का पृथक्करण**

केल्सन ने ऑस्टिन की तरह यह स्पष्ट किया कि कानून को नैतिकता से नहीं जोड़ा जाना चाहिए।

- कानून = वैध मानक

- नैतिकता = मूल्य आधारित व्यवहार

दोनों स्वतंत्र क्षेत्र हैं।

📌 **6. दंड (Sanction) का महत्व**

केल्सन के अनुसार कानून हमेशा **प्रतिबंध या दंड** से जुड़ा होता है।

- यदि कोई मानक उल्लंघित होता है तो दंडात्मक प्रक्रिया लागू होती है
- यही दंड कानून को बाध्यकारी बनाता है

✨ **आलोचनाएँ (Criticism)**

केल्सन के सिद्धांत पर निम्न आलोचनाएँ हुई—

1. **अत्यधिक विधिक तकनीकीकरण** : सामाजिक व नैतिक प्रभावों की उपेक्षा।
2. **Grundnorm की व्याख्या अस्पष्ट** : यह कैसे उत्पन्न होती है, स्पष्ट नहीं।
3. **व्यावहारिकता की कमी** : वास्तविक लोकतांत्रिक एवं सामाजिक कारक सिद्धांत में नहीं।
4. **न्याय एवं नैतिक मूल्यों की अनदेखी** : कानून केवल संरचना नहीं, बल्कि सामाजिक न्याय का माध्यम भी है।

✨ **निष्कर्ष**

हांस केल्सन का शुद्ध विधि सिद्धांत आधुनिक विधिशास्त्र में महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है।
इसने कानून को पूर्णतः वैज्ञानिक, तार्किक एवं मानक दृष्टिकोण से समझाने का प्रयास किया।
हालाँकि सामाजिक, नैतिक एवं राजनीतिक तत्वों की उपेक्षा के कारण यह सिद्धांत आलोच्य रहा, फिर भी **कानून को ईश्वरीय, नैतिक और सामाजिक प्रभावों से मुक्त कर विशुद्ध विधि विज्ञान के रूप में स्थापित करने का श्रेय केल्सन को ही जाता है।**

**********==========**********

4 Question: Pain & pleasure theory (Bentham)?

Answer: 📌 **पीड़ा एवं सुख सिद्धांत (जेरेमी बेंथम)**

✨ **परिचय**

जेरेमी बेंथम उपयोगितावाद (Utilitarianism) का प्रणेता तथा आधुनिक विधिशास्त्र में अत्यंत महत्त्वपूर्ण दार्शनिक माना जाता है। उसने मानव व्यवहार, कानून एवं शासन की वैधता का आधार **सुख** (Pleasure) और **दुख / पीड़ा** (Pain) को माना। बेंथम के अनुसार मानव की प्रत्येक क्रिया का अंतिम लक्ष्य सुख की प्राप्ति और पीड़ा से बचना है।

📌 1. सिद्धांत का मुख्य आधार

बेंथम के अनुसार प्रकृति ने मनुष्य को दो स्वामी दिए हैं—
सुख (Pleasure) **और पीड़ा** (Pain)
यही दोनों मानव जीवन, निर्णय, नीति, शासन एवं विधि के मार्गदर्शक हैं।
इस सिद्धांत को **हेडोनिज़्म** (Hedonism) का दार्शनिक आधार भी माना जाता है।

📌 2. अधिकतम सुख सिद्धांत (Principle of Utility)

बेंथम का प्रसिद्ध सिद्धांत है—
"अधिकतम लोगों के लिए अधिकतम सुख (Greatest Happiness of the Greatest Number)"
अर्थात् कोई भी कानून, नीति या शासन वही उचित है जो अधिकतम व्यक्तियों को अधिकतम सुख पहुँचाए।

📌 3. सुख एवं पीड़ा के मापन का पैमाना (Hedonic Calculus)

बेंथम ने सुख और पीड़ा को मात्रात्मक रूप से मापने का प्रयास किया, जिसे **हेडोनिक कैलकुलस** कहा गया। इसके अंतर्गत सुख के मूल्यांकन के सात आधार हैं—

1. **तीव्रता** (Intensity)
2. **अवधि** (Duration)
3. **निश्चितता** (Certainty)
4. **निकटता** (Propinquity)
5. **फलप्राप्ति** (Fecundity) – आगे और सुख उत्पन्न करने की क्षमता
6. **शुद्धता** (Purity) – दुःख से मुक्त सुख
7. **व्यापकता** (Extent) – कितने लोगों तक पहुँचता है

इन आधारों पर किसी नीति या कानून की उपयोगिता एवं प्रभाव का मूल्यांकन किया जाता है।

📌 4. विधि एवं शासन में सिद्धांत का प्रयोग

- कानून का उद्देश्य समाज को अधिकतम सुख प्रदान करना होना चाहिए।
- दंड (Punishment) का उद्देश्य मात्र प्रतिशोध नहीं, बल्कि **सामाजिक सुख-संतुलन** स्थापित करना है।
- यदि किसी दंड से होने वाला पीड़ा-परिणाम उससे मिलने वाले सुख या सामाजिक लाभ से अधिक हो तो वह दंड अन्यायपूर्ण है।

📌 5. नैतिकता एवं कानून का संबंध

बेंथम ने नैतिकता और कानून को पूर्णतः अलग नहीं माना।
उसके अनुसार-

- **उचित कानून वही है जो सामाजिक सुख को बढ़ाए**
- **अनुचित कानून वही है जो अनावश्यक पीड़ा उत्पन्न करे**

अतः कानून की सफलता **जन-सुख** पर आधारित है, न कि नैतिक उपदेशों पर।

✨ आलोचनाएँ

1. **गुणात्मक पक्ष की उपेक्षा** – सुख को केवल मात्रा में मापा, गुणवत्ता को महत्व नहीं दिया।
2. **अल्पसंख्यक हितों की उपेक्षा** – बहुसंख्यक के सुख के लिए अल्पसंख्यक के अधिकार दब सकते हैं।
3. **सुख का मापन कठिन** – सुख और पीड़ा की तीव्रता का वैज्ञानिक मापन संभव नहीं।
4. **नैतिक मानकों की कमी** – केवल सुख को आदर्श मानने से नीति-नैतिकता कमजोर हो सकती है।

✨ निष्कर्ष

बेंथम का पीड़ा एवं सुख सिद्धांत मानव आचरण, नीति, शासन एवं विधि के मूल्यांकन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।
उसने पहली बार स्पष्ट किया कि **कानून का उद्देश्य बहुसंख्यक जनता के सुख की वृद्धि और अनावश्यक पीड़ा की रोकथाम है।**
यद्यपि सिद्धांत में कुछ सीमाएँ हैं, फिर भी आधुनिक लोकतांत्रिक कानून, दंड सिद्धांत एवं कल्याणकारी राज्य की अवधारणा को सबसे अधिक दार्शनिक आधार प्रदान करने का श्रेय बेंथम को ही जाता है।

**********==========**********

5 Question: Living law theory (Ehrlich)?

Answer: **लिविंग लॉ थ्योरी** (**यूजेन एरलिच**)

परिचय

जर्मन समाजशास्त्री एवं विधिवेत्ता **यूजेन एरलिच** (**Eugen Ehrlich)** समाजशास्त्रीय विधि विचारधारा के प्रमुख प्रवर्तक माने जाते हैं। उन्होंने **Living Law (जीवित कानून**) का सिद्धांत प्रस्तुत किया, जिसके अनुसार वास्तविक कानून अदालतों और विधानसभाओं में नहीं, बल्कि **समाज के जीवंत व्यवहार, रीति-रिवाज एवं सामाजिक संबंधों** में पाया जाता है। एरलिच का मानना था कि कानून का निर्माण और पालन समाज स्वयं करता है, इसलिए कानून का स्रोत समाज की दैनिक जीवन प्रक्रिया है, न कि केवल राज्य द्वारा बनाए गए नियम।

लिविंग लॉ का अभिप्राय

एरलिच के अनुसार **राज्यकृत विधि** (**State Law)** केवल कानून का एक रूप है, जबकि वास्तविक और प्रभावी कानून **सामाजिक कानून** होता है।

- व्यक्ति कैसे व्यवहार करें
- परिवार एवं जातीय समूह कैसे संगठित हों
- समाज किन मानकों पर सही-गलत तय करता है
  इन्हीं से **जीवित कानून** बनता है।
  इस प्रकार कानून एक **जीवंत सामाजिक शक्ति** है, जो निरंतर बदलते सामाजिक वातावरण के अनुसार विकसित होती रहती है।

मुख्य सिद्धांत

1. **कानून का मुख्य स्रोत समाज**
   एरलिच का मत था कि समाज के भीतर चलने वाली परम्पराएँ, नैतिक मूल्य, आर्थिक संबंध और सामाजिक मानदंड ही वास्तविक कानून का निर्माण करते हैं।

2. **कानून और राज्य का अंतर**
   राज्य मात्र कानून को संहिताबद्ध करता है, परंतु कानून की उत्पत्ति समाज में पहले से मौजूद व्यवहार-मानकों से होती है।
   इसलिए **"कानून समाज में जन्म लेता है और राज्य में संहिताबद्ध होता है।**"

3. **सामाजिक नियंत्रण का आधार**
   व्यक्ति कानून का पालन इसलिए नहीं करता कि राज्य दंडित करेगा, बल्कि इसलिए करता है कि समाज उसे स्वीकार या अस्वीकार करेगा।
   यही सामाजिक दबाव जीवित कानून को प्रभावी बनाता है।

4. **न्यायालयों की भूमिका सीमित**
   एरलिच के अनुसार न्यायालय केवल **कानून का निर्णयन** करते हैं, उसका निर्माण नहीं।
   न्यायालय वही कानून लागू करते हैं, जो समाज पहले से स्वीकार कर चुका होता है।

उदाहरण

- विवाह, तलाक, उत्तराधिकार और गोत्र संबंधी रीतियाँ शताब्दियों से समाज द्वारा नियंत्रित होती आईं — बाद में उन्हें विधि का रूप दिया गया।
- भारतीय ग्रामीण पंचायतें, खाप, बिरादरी नियम, व्यापारिक आचार सभी **जीवित कानून** के रूप माने जाते हैं, क्योंकि राज्य कानून के बिना भी ये सामाजिक आचरण नियंत्रित करते हैं।

आलोचना

- एरलिच को इस आधार पर आलोचना झेलनी पड़ी कि वे **राज्य की शक्ति को कम करके आंकते हैं**।
- आलोचकों के अनुसार यदि केवल समाज ही कानून का स्रोत है, तो अनेक वर्जित व भेदभावपूर्ण रिवाज भी न्यायोचित ठहराए जा सकते हैं।
- इसके अतिरिक्त ज़रूरी है कि कानून सामाजिक परंपराओं के साथ-साथ **न्याय, समानता और मानवाधिकारों** की रक्षा करे।

उपसंहार

एरलिच की लिविंग लॉ थ्योरी विधि को सांसारिक, जीवंत एवं सामाजिक जीवन से जुड़ा सिद्धांत प्रस्तुत करती है। यह बताती है कि कानून केवल संहिताओं में नहीं, बल्कि **लोगों के बीच प्रचलित आचरण, नैतिकता, रिवाजों और संबंधों** में निहित होता है। कानून तभी प्रभावी है, जब वह समाज की जीवित चेतना के अनुरूप चलता है। एरलिच का यह दृष्टिकोण आधुनिक **सामाजिक न्याय, विधि सुधार एवं समाज-आधारित विधिक संरचना** के अध्ययन में अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है।

**********==========**********

6 Question: Social engineering (Rosco pound)?

Answer: **सोशल इंजीनियरिंग** (**Roscoe Pound)**

परिचय

अमेरिकी विधिवेत्ता **रॉस्को पाउंड** समाजशास्त्रीय विधि विचारधारा के प्रमुख प्रतिनिधि थे। उन्होंने **सोशल इंजीनियरिंग** (**Social Engineering)** का सिद्धांत प्रस्तुत किया, जिसके अनुसार कानून का उद्देश्य समाज में

मौजूद विभिन्न हितों के बीच **संतुलन और सामंजस्य स्थापित करना** है। पाउंड के अनुसार समाज एक जटिल संरचना है, जहाँ व्यक्तियों, समूहों और राज्य के अनेक हित परस्पर टकराते रहते हैं। इन हितों के समुचित समन्वय द्वारा ही कानून **सर्वोत्तम सामाजिक व्यवस्था** कायम करता है।

सोशल इंजीनियरिंग का अभिप्राय

पाउंड ने समाज की तुलना एक **इंजीनियरिंग प्रक्रिया** से की, जहाँ कानून एक इंजीनियर की तरह **सामाजिक संसाधनों का न्यायपूर्ण वितरण** और **हितों का समुचित समायोजन** करता है।
उनके अनुसार:

- कानून का प्रमुख कार्य सामाजिक जीवन में **सुरक्षा, न्याय, समता, स्वतंत्रता तथा प्रगति** को बनाए रखना है।
- कानून का लक्ष्य 'अधिकतम अच्छे' को 'अधिकतम संख्या' तक पहुँचाना नहीं, बल्कि **विवादित हितों में न्यायपूर्ण समन्वय** स्थापित करना है।

हितों का वर्गीकरण

पाउंड ने सामाजिक हितों को तीन मुख्य वर्गों में विभाजित किया:

1. **व्यक्तिगत हित (Individual Interests)**
   जैसे — जीवन, स्वतंत्रता, संपत्ति, स्वास्थ्य, परिवार, व्यवसाय आदि।
2. **सार्वजनिक या सामुदायिक हित (Public/Social Interests)**
   जैसे — शांति, सुरक्षा, नैतिकता, सामाजिक व्यवस्था, पर्यावरण संरक्षण, सड़क सुरक्षा, सार्वजनिक स्वास्थ्य आदि।
3. **राज्य हित (State Interests)**
   जैसे — कानून-व्यवस्था बनाए रखना, न्याय प्रशासन, राज्य की सुरक्षा, कर वसूली आदि।

कानून का उद्देश्य इन तीनों हितों के बीच **संतुलन** कायम करना है।

सोशल इंजीनियरिंग की प्रक्रिया

पाउंड के अनुसार कानून निर्माण एवं न्यायिक निर्णय निम्न सिद्धांतों पर आधारित होने चाहिए:

- सामाजिक संघर्षों का वैज्ञानिक विश्लेषण
- हितों के बीच न्यायपूर्ण समायोजन

- बहुसंख्यकों के कल्याण के साथ अल्पसंख्यकों के संरक्षण
- सामाजिक सुरक्षा और स्थिरता की रक्षा
- समावेशी न्याय

कानून तभी सफल है जब वह **व्यक्तिगत स्वतंत्रता** और **सामाजिक नियंत्रण** के बीच संतुलन स्थापित कर सके।

उदाहरण

- सड़क सुरक्षा विधियाँ व्यक्तिगत स्वतंत्रता को सीमित करती हैं, किंतु **सामुदायिक सुरक्षा** को बढ़ाती हैं।
- विवाह, तलाक, दहेज, बाल विवाह प्रतिबंध, श्रम कानून आदि ऐसे उदाहरण हैं जहाँ कानून **हितों का संतुलन** बनाकर सामाजिक सुधार करता है।

आलोचना

- पाउंड की सिद्धांत आलोचना का मुख्य आधार यह है कि वह समाज को संतुलित मानकर चलता है, जबकि समाज निरंतर बदलता रहता है।
- हितों को मात्र वर्गों में बाँटना व्यावहारिक रूप से कठिन है।
- आलोचकों का कहना है कि यह सिद्धांत सामाजिक न्याय की जगह केवल **समायोजन** पर बल देता है।

उपसंहार

सोशल इंजीनियरिंग सिद्धांत कानून को एक **रचनात्मक, समन्वयक और न्यायिक प्रक्रिया** के रूप में प्रस्तुत करता है। पाउंड ने कानून को सामाजिक जीवन का नियामक मानते हुए यह प्रतिपादित किया कि कानून का वास्तविक उद्देश्य **सामाजिक हितों के टकराव को कम कर समाज को व्यवस्थित, संतुलित और न्यायपूर्ण बनाना** है।
इस प्रकार, सोशल इंजीनियरिंग आधुनिक विधि दर्शन, नीति-निर्माण, न्यायिक सक्रियता व सामाजिक सुधार के लिए एक महत्त्वपूर्ण आधार प्रदान करती है।

**********==========**********

7 Question: Volkegist theory (Savigny)?

Answer: **वोल्क्सगाइस्ट सिद्धांत (Savigny) – 20 अंक**

परिचय

फ्रेडरिक कार्ल वॉन सैविनी (**Friedrich Karl von Savigny)** ऐतिहासिक विधि विचारधारा (Historical School of Jurisprudence) के प्रमुख प्रवर्तक थे। उन्होंने **Volkgeist / Volksgeist** अर्थात् **राष्ट्र की सामूहिक चेतना या राष्ट्रीय आत्मा** का सिद्धांत प्रस्तुत किया। सैविनी के अनुसार **कानून किसी व्यक्ति, राजा या विधानमंडल की देन नहीं होता**, बल्कि वह समाज के **ऐतिहासिक अनुभव, परंपराओं, संस्कृति, भाषा, धर्म और सामाजिक जीवन** से स्वाभाविक रूप से उत्पन्न होता है।

वोल्क्सगाइस्ट का अभिप्राय

Volk + Geist का अर्थ है **राष्ट्र की आत्मा या जन-चेतना**।
सैविनी का मत था कि:

- जिस प्रकार भाषा, कला, धर्म और संस्कृति स्वाभाविक रूप से विकसित होती हैं,
- उसी प्रकार **कानून भी जनता की आत्मा से स्वयंस्फूर्त रूप में विकसित होता है।**

कानून कोई बाहरी थोपे हुए नियम नहीं, बल्कि **समाज की आंतरिक चेतना का प्रतिबिंब** है।

मुख्य विशेषताएँ

1. **कानून की उत्पत्ति समाज से**
   कानून किसी विधायक की कल्पना नहीं, बल्कि **जनता के व्यवहार, मान्यताओं और परंपराओं** में निहित होता है।
   "पहले रीति-रिवाज, फिर संहिता" – यही सैविनी का दृष्टिकोण था।

2. **कानून का क्रमिक विकास**
   कानून अचानक नहीं बनता, वह **पीढ़ी दर पीढ़ी धीरे-धीरे** विकसित होता है।
   समाज जितना आगे बढ़ता है, कानून भी उसी अनुरूप विकसित होता है।

3. **संहिता बनाने का विरोध**
   सैविनी ने कानून की **तत्काल संहिताकरण** (**Codification)** का विरोध किया।
   उनका मानना था कि जब तक समाज परिपक्व न हो जाए, तब तक कानून को संहिताबद्ध करना उसे **रोक देना** है।

4. **विधाता की भूमिका सीमित**
   विधायिका केवल उसी कानून को लिखित रूप प्रदान कर सकती है जो **पहले से समाज में प्रचलित** हो।
   विधायिका कानून बनाती नहीं, बल्कि उसे पहचानती और संरक्षित करती है।

Volkgeist का प्रभाव

- रीति-रिवाज कानून का प्रमुख स्रोत बने।
- पारिवारिक कानून, उत्तराधिकार, विवाह-संबंधी परम्पराओं को वैधानिक स्वीकृति मिली।
- राष्ट्रवाद और सांस्कृतिक एकता को बढ़ावा मिला।
- जर्मनी में बाद में विधि संहिताओं के वैज्ञानिक विकास में इस सिद्धांत का योगदान रहा।

आलोचना

- यह सिद्धांत **संस्कृति और परंपरा को अत्यधिक महत्व** देता है, जिससे प्रगतिशील सुधार बाधित हो सकते हैं।
- यदि केवल रिवाजों पर निर्भर हों, तो अंधविश्वास, जातिगत भेदभाव और सामाजिक असमानताएँ भी न्यायोचित ठहर सकती हैं।
- आधुनिक समाज में तेजी से बदलते सामाजिक ढाँचों के साथ यह सिद्धांत व्यावहारिक रूप से सीमित माना जाता है।

उपसंहार

सैविनी का वोल्क्सगाइस्ट सिद्धांत कानून को **जीवित सामाजिक भाव, ऐतिहासिक अनुभव एवं सांस्कृतिक चेतना** का परिणाम मानता है। कानून किसी सत्ता द्वारा थोपा गया आदेश नहीं, बल्कि **जनता की आत्मा और सामूहिक जीवन का नैसर्गिक विकास** है।
यद्यपि यह सिद्धांत परिवर्तन की गति को सीमित करता है, फिर भी यह आज भी विधिक विकास में **इतिहास, संस्कृति और समाज के प्रभाव** को समझने का महत्वपूर्ण दृष्टिकोण प्रदान करता है।

**********==========**********

8 Question: Status to Contract (Henary Maine),

Answer: **स्टेटस से कॉन्ट्रैक्ट का सिद्धांत (हेनरी मेन)**

परिचय

सर हेनरी मेन (Henry Maine) ऐतिहासिक विधि विचारधारा के प्रमुख विद्वान थे। उन्होंने समाज के विकास को समझाने के लिए प्रसिद्ध सिद्धांत **"Status to Contract"** प्रस्तुत किया। मेन के अनुसार मानव सभ्यता की प्रगति **नियत सामाजिक स्थिति (Status)** से **स्वतंत्र समझौतों (Contract)** की ओर हुई है।
अर्थात् प्रारंभिक समाज में व्यक्ति का जीवन, अधिकार तथा दायित्व उसकी **जन्म आधारित स्थिति** पर निर्भर थे, जबकि आधुनिक समाज में ये सब **व्यक्तिगत इच्छाओं, अनुबंधों और स्वतंत्र निर्णयों** पर आधारित हैं।

स्टेटस का अभिप्राय

Status का अर्थ है वह स्थिति जो जन्म के आधार पर स्वतः मिल जाती है —

- जाति
- कुल/वर्ण
- पारिवारिक अधिकार
- सामाजिक वर्ग
- पुरुष/स्त्री की भूमिका
- पैतृक संपत्ति का अधिकार

अर्थात् व्यक्ति जैसा जन्म लेता है, वैसी ही सामाजिक पहचान और अधिकार उसे स्वतः प्राप्त हो जाते हैं।

कॉन्ट्रैक्ट का अभिप्राय

Contract वह स्थिति है जहाँ

- व्यक्ति अपने अधिकार, दायित्व और संबंध **स्वतंत्र निर्णय** से बनाता है।
- यहाँ संबंध **स्वैच्छिक समझौते** और **व्यक्तिगत इच्छा** पर आधारित होते हैं, न कि जन्म आधारित व्यवस्था पर।

सिद्धांत का मुख्य तत्त्व

हेनरी मेन के अनुसार:

- प्रारंभिक समाज में व्यक्ति की पहचान और अधिकार **समूह पर आधारित** थे ('परिवार-केन्द्रित' समाज)।
- समय के साथ समाज में **व्यक्तिगत स्वतंत्रता** बढ़ी और व्यक्ति ने अपने संबंध **अनुबंधों** के माध्यम से बनाना प्रारंभ किया।
- इस प्रकार मानव समाज **स्टेटस आधारित सामाजिक संरचना से कॉन्ट्रैक्ट आधारित संरचना** की ओर बढ़ा।

उदाहरण

1. **प्राचीन समाज**:
   विवाह, संपत्ति, उत्तराधिकार, धर्म—सभी जन्म और जाति से निर्धारित। व्यक्ति का कोई अलग व्यक्तित्व नहीं।

2. **आधुनिक समाज**:
   विवाह, व्यवसाय, संपत्ति, श्रम संबंध, सेवा अनुबंध—सब **स्वैच्छिक अनुबंधों** पर आधारित।
   व्यक्ति स्वयं तय करता है कि उसे किससे, कैसे और किन शर्तों पर संबंध बनाना है।

प्रभाव एवं महत्त्व

- आधुनिक **अनुबंध विधि** (**Contract Law)** का सैद्धांतिक आधार निर्मित हुआ।
- व्यक्ति केन्द्रित समाज (Individualism) का विकास हुआ।
- लोकतंत्र, पूँजीवाद, बाज़ार व्यवस्था, श्रम अनुबंध, विवाह चयन की स्वतंत्रता—इन सब पर इस सिद्धांत का प्रभाव देखा जाता है।
- कानून का विकास **सामूहिक पहचान से व्यक्तिगत अधिकार** की ओर हुआ।

आलोचना

- कुछ विद्वानों का मत है कि आधुनिक समाज में **स्टेटस और कॉन्ट्रैक्ट दोनों साथ-साथ** चलते हैं।
  उदाहरण: जाति, वर्ग, धर्म, सामाजिक संरचना आज भी कई बार व्यक्ति की स्वतंत्रता को प्रभावित करते हैं।
- आधुनिक कॉन्ट्रैक्ट व्यवस्था में आर्थिक असमानता के कारण समझौते हमेशा **समता के आधार पर नहीं** होते।

उपसंहार

मेन का **स्टेटस से कॉन्ट्रैक्ट** सिद्धांत मानव सभ्यता की प्रगति और विधिक विकास की ऐतिहासिक यात्रा को स्पष्ट करता है।
यह सिद्धांत बताता है कि समाज जैसे-जैसे आगे बढ़ता है, व्यक्ति की स्वतंत्रता, स्वायत्तता और अधिकार बढ़ते हैं तथा वह अपने निर्णय **जन्म-निर्धारित स्थिति के बजाय स्वैच्छिक अनुबंधों** के आधार पर लेने लगता है।
आज भी यह सिद्धांत सामाजिक परिवर्तन को समझने का एक वैज्ञानिक और महत्त्वपूर्ण आधार प्रदान करता है।

**********==========**********

9 Question: Social Solidarity (Leon Duguit)?

Answer: **सामाजिक एकता सिद्धांत (Social Solidarity Theory) – लियोन ड्यूगिट (Leon Duguit)**

1. प्रस्तावना

फ्रांस के विख्यात समाजशास्त्रीय विधिवेत्ता **लियोन ड्यूगिट** ने कानून के क्षेत्र में **सामाजिक एकता (Social Solidarity)** के सिद्धांत को प्रमुख रूप से प्रस्तुत किया।
ड्यूगिट के अनुसार **कानून का उद्देश्य न तो सार्वभौमिक सत्ता है और न ही व्यक्तिगत स्वतंत्रता**, बल्कि केवल **सामाजिक एकता और सामूहिक हित (Collective Welfare)** को सुरक्षित करना है।

---

2. सामाजिक एकता का अर्थ

ड्यूगिट के अनुसार समाज तभी व्यवस्थित रहता है जब उसके सदस्य **आपसी निर्भरता (Mutual Dependence / Interdependence)** को स्वीकार करते हुए एक-दूसरे के साथ सहयोग करें।
सामाजिक एकता का तात्पर्य है:

- समाज के प्रत्येक व्यक्ति का दूसरे पर निर्भर होना
- व्यक्तिगत हित से ऊपर **सामूहिक हित** को महत्व देना
- समाज में संतुलन, शांति और सहयोग बनाए रखना

---

3. सिद्धांत के मुख्य तत्व

1. **व्यक्ति का स्थान नहीं, समाज का कल्याण सर्वोपरि**
   व्यक्ति अकेला कुछ नहीं, वह समाज पर आश्रित है। इसलिए समाज हित ही वास्तविक कानून का आधार है।

2. **सत्ता का निरसन (Denial of Sovereignty)**
   ड्यूगिट ने **सार्वभौमिकता (Sovereignty)** की अवधारणा को अस्वीकार किया।
   उनके अनुसार कोई शासक, राज्य या संस्था सर्वोच्च नहीं; सबका अस्तित्व केवल सामाजिक कल्याण के लिए है।

3. **कानून = सामाजिक कार्यों का नियमन**
   कानून का उद्गम किसी संप्रभु की इच्छा नहीं, बल्कि **सामाजिक आवश्यकताओं और नैतिक एकता** से होता है।

4. **कर्तव्य पर बल** (**Duty-Oriented Theory)**
   ड्यूगिट ने **अधिकारों** की तुलना में **कर्तव्यों** को अधिक महत्व दिया।
   यदि प्रत्येक व्यक्ति अपना सामाजिक कर्तव्य निभाए तो कानून स्वतः प्रभावी हो जाता है।

---

4. कानून की परिभाषा ड्यूगिट के अनुसार

ड्यूगिट के अनुसार कानून वह नियम है,

- जो **सामाजिक एकता को बनाए रखने**
- और **सामूहिक हित की रक्षा करने**
  के लिए समाज द्वारा स्वीकार और लागू किया जाए।

---

5. सामाजिक निर्भरता का महत्त्व

ड्यूगिट का केंद्रबिंदु यह है कि:

- समाज में प्रत्येक व्यक्ति दूसरे पर **आर्थिक, सामाजिक, नैतिक रूप से निर्भर** है।
- यह परस्पर निर्भरता ही **कानून, नैतिकता और राज्य व्यवस्था** का आधार है।

---

6. आलोचना

- सार्वभौमिकता (Sovereignty) के खंडन को अत्यंत व्यावहारिक नहीं माना गया।
- कानून केवल सामाजिक एकता के लिए कार्य करता है, यह अवधारणा आधुनिक बहुवादी समाज में सीमित मानी गई।
- अधिकारों की उपेक्षा कर केवल कर्तव्य पर बल देना **व्यक्ति की स्वतंत्रता कम करता है**।

---

7. उपसंहार

लियोन ड्यूगिट का सामाजिक एकता सिद्धांत कानून की **सामाजिक प्रकृति** को स्पष्ट करता है।
यह बताता है कि कानून न तो किसी संप्रभु की इच्छा है और न ही केवल व्यक्तिगत आज़ादी का साधन, बल्कि वह **सामूहिक कल्याण एवं सामाजिक संतुलन** की शक्ति है।
ड्यूगिट ने कानून के मूल में **सह-अस्तित्व, सहयोग और सामाजिक हित** को स्थापित कर **समाज-आधारित विधिशास्त्र** का नया आयाम प्रस्तुत किया।

**********==========**********

10 Question: Types of law?

Answer: **प्रश्न**: **विधि के प्रकार** (**Types of Law)**

1. प्रस्तावना

विधि (Law) समाज में **न्याय, व्यवस्था, अनुशासन और नियंत्रण** बनाए रखने का माध्यम है।
मानव व्यवहार को नियमित करने, अधिकारों की रक्षा करने और दायित्वों के पालन हेतु विभिन्न प्रकार के कानून बनाए जाते हैं।
विधि के प्रमुख प्रकारों का वर्गीकरण सामाजिक, राजनीतिक, नैतिक और न्यायिक आवश्यकताओं के आधार पर किया जाता है।

---

2. विधि के प्रमुख प्रकार (**Main Types of Law)**

(1) प्राकृतिक विधि (**Natural Law)**

- यह मानव की **नैतिकता, तर्क एवं विवेक** पर आधारित होती है।
- प्राकृतिक अधिकार, न्याय और मूल्य इसके आधार तत्व हैं।
- यह कालातीत, सार्वभौमिक और मानव प्रकृति के अनुसार मानी जाती है।

(2) सकारात्मक विधि / राज्य विधि (**Positive Law / State-made Law)**

- यह कानून **राज्य द्वारा निर्मित एवं लागू** किया जाता है।
- विधिमंडल द्वारा बनाए गए अधिनियम, संविधान, न्यायिक व्याख्या और नियम इसमें आते हैं।
- इसका पालन राज्य की शक्ति और दंड व्यवस्था द्वारा कराया जाता है।

(3) दैवीय विधि / ईश्वरीय विधि (**Divine / Religious Law)**

- धार्मिक ग्रंथों और विश्वासों पर आधारित कानून।
- जैसे मनुस्मृति, कुरान, बाइबिल, गुरु ग्रंथ साहिब के नियम।

(4) प्रथागत विधि (**Customary Law)**

- समाज में लंबे समय से चली आ रही **प्रथा, परंपरा और सामाजिक मान्यताओं** पर आधारित।
- परिवार, विवाह, उत्तराधिकार, गोत्र, जनजातीय कानून आदि इसमें आते हैं।

(5) संवैधानिक विधि (**Constitutional Law)**

- राज्य की संरचना, शक्तियाँ, नागरिक अधिकार एवं शासन प्रणाली को नियंत्रित करती है।

- संविधान सर्वोच्च विधि है।

(6) आपराधिक विधि (Criminal Law)

- अपराध, दंड, प्रतिबंध, सुरक्षा उपायों एवं न्यायिक प्रक्रिया से संबंधित।
- इसका उद्देश्य **सार्वजनिक व्यवस्था एवं शांति की रक्षा** करना है।

(7) दिवानी विधि (Civil Law)

- निजी विवाद, संपत्ति, अनुबंध, उत्तराधिकार, विवाह एवं परिवारिक अधिकारों को नियंत्रित।
- मुख्य उद्देश्य **क्षतिपूर्ति व अधिकार संरक्षण** है।

(8) प्रशासनिक विधि (Administrative Law)

- प्रशासनिक संस्थाओं की powers, कार्यप्रणाली एवं नियंत्रण से संबंधित।
- अधिकारों के अनुचित प्रयोग पर रोक तथा न्यायसंगत प्रशासन सुनिश्चित करता है।

(9) अंतर्राष्ट्रीय विधि (International Law)

- विभिन्न राष्ट्रों के बीच संबंधों, संधियों, कूटनीति, युद्ध और शांति की स्थिति को नियंत्रित।
- संयुक्त राष्ट्र के नियम और अंतर्राष्ट्रीय संधियाँ इसमें आती हैं।

(10) लोक विधि (Public Law)

- **राज्य और नागरिक** के संबंधों को नियंत्रित।
- राज्यहित सर्वोपरि।

(11) निजी विधि (Private Law)

- नागरिकों के बीच **अंतरवैयक्तिक (Private) संबंधों** को नियंत्रित।
- विवाह, अनुबंध, परिवार, संपत्ति संबंधी विवाद आदि।

---

3. विधि का महत्व

- समाज में **न्याय, संतुलन एवं व्यवस्था** स्थापित करता है।
- व्यक्ति के अधिकारों और स्वतंत्रता की रक्षा करता है।
- दायित्वों और उत्तरदायित्वों को स्पष्ट करता है।
- अपराध नियंत्रण एवं विवाद समाधान में सहायक।

---

4. निष्कर्ष

विधि के विभिन्न प्रकार समाज की विविध आवश्यकताओं—जैसे नैतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक और राजनीतिक—के अनुसार निर्मित हुए हैं।
इनका मूल उद्देश्य समाज में **सुरक्षा, शांति, न्याय, व्यवस्था और सामूहिक हित** की स्थापना करना है।
प्राकृतिक से लेकर आधुनिक संवैधानिक और अंतर्राष्ट्रीय कानून तक, सभी विधियाँ मिलकर **जटिल सामाजिक ढांचे को व्यवस्थित और नियंत्रित** करती हैं।

**********==========**********

11 Question: definitions of Jurisprudence?

Answer: **प्रश्न**: **विधिशास्त्र की परिभाषाएँ** (**Definitions of Jurisprudence)**

20 Marks – Hindi

1. प्रस्तावना

विधिशास्त्र (Jurisprudence) विधि का **सैद्धांतिक एवं दार्शनिक अध्ययन** है।
यह कानून की प्रकृति, स्रोत, उद्देश्य, तत्वों एवं विकास का वैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत करता है।
अर्थात् यह कानून की नींव, उसका आधार, निर्माण एवं न्याय की संकल्पना को समझने का शास्त्र है।

---

2. प्रमुख विद्वानों द्वारा परिभाषाएँ

(1) सल्मंड (**Salmond)**

साल्मंड के अनुसार:
"विधिशास्त्र वह विज्ञान है जो विधि के प्रथम सिद्धांतों का व्यवस्थित अध्ययन करता है।"
अर्थात, विधिशास्त्र कानून के मूल सिद्धांतों का दार्शनिक एवं वैज्ञानिक विश्लेषण है।

---

(2) ऑस्टिन (**Austin)**

ऑस्टिन के अनुसार विधिशास्त्र:
"सकारात्मक विधि का दर्शन है, अर्थात संप्रभु द्वारा दिए गए आदेशों का अध्ययन।"
अर्थात् विधिशास्त्र राज्य द्वारा निर्मित कानून और उनके पालन व दंड व्यवस्था का अध्ययन करता है।

---

(3) केल्सन (**Kelsen)**

केल्सन के अनुसार:

"विधिशास्त्र शुद्ध विधि का सिद्धांत है जो केवल विधिक मान्यों (Norms) का अध्ययन करता है।"

उन्होंने नैतिकता, समाज और राजनीति से अलग **शुद्ध विधिक सिद्धांत** की वकालत की।

---

(4) हॉलैंड (Holland)

हॉलैंड के अनुसार:

"विधिशास्त्र कानून का औपचारिक विज्ञान है, जो उसके मूलभूत सिद्धांतों का अध्ययन करता है।"

---

(5) ड्यूगिट (Duguit)

ड्यूगिट के अनुसार:

"विधिशास्त्र कानून की सामाजिक एकता एवं सामूहिक हित की व्याख्या है।"

अर्थात् कानून का उद्देश्य व्यक्ति नहीं, समाज का कल्याण है।

---

(6) रोस्को पाउंड (Roscoe Pound)

पाउंड के अनुसार:

"विधिशास्त्र सामाजिक अभियांत्रिकी (Social Engineering) का माध्यम है।"

कानून समाज में हितों का संतुलन बनाकर **न्यायसंगत व्यवस्था** स्थापित करता है।

---

(7) अरस्तु (Aristotle)

"विधिशास्त्र न्याय और अन्याय की तर्कपूर्ण व्याख्या का विज्ञान है।"

---

3. विधिशास्त्र का महत्व

- कानून की संपूर्ण प्रकृति को समझने में सहायक
- न्याय के आदर्शों व सामाजिक व्यवस्था की व्याख्या
- विधि निर्माण और न्यायिक निर्णयों के आधार सिद्धांत प्रदान करता है
- विधि को **तर्क, विवेक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण** से देखने की क्षमता विकसित करता है

---

4. निष्कर्ष

विधिशास्त्र केवल कानून का अध्ययन नहीं, बल्कि कानून के **दार्शनिक, नैतिक, सामाजिक एवं तर्कसंगत आयामों** का विश्लेषण है।

अनेक विद्वानों ने अपनी-अपनी दृष्टि से इसे परिभाषित किया, परंतु सभी का मुख्य केन्द्र **विधि के मूल सिद्धांत, उद्देश्य और विधिक मूल्य** हैं।

इस प्रकार विधिशास्त्र कानून के तत्व, स्वरूप और विधिक प्रक्रिया का आधारभूत एवं वैज्ञानिक अध्ययन है।

**********==========**********

1 Question: define Social Contract theory (Grotius, Hobbs, Lock, Rousseau)?

📌 Social Contract Theory (Grotius, Hobbes, Locke, Rousseau)

✨ Introduction

Social Contract Theory is a foundational political philosophy which explains how human beings transitioned from a pre-social "state of nature" into an organized society by entering into a mutual agreement. According to this theory, the legitimacy of political authority originates from the consent of the governed, and the establishment of state, government and law is based on a collective contract among individuals.

1️⃣ Hugo Grotius

Grotius is regarded as the father of modern international law. He believed that human beings are rational and social by nature and therefore willingly enter into a contract to maintain peace, security and order.
The authority of the state is derived from the collective consent of the people and its primary aim is to ensure justice and harmony in society.

2️⃣ Thomas Hobbes

Hobbes described the state of nature as "solitary, poor, nasty, brutish and short," where human life was dominated by fear, insecurity and constant conflict.
Individuals surrendered all their natural rights except the right to life to a single absolute sovereign (Leviathan).
The social contract, according to Hobbes, is **one-sided** — the people are bound to obey the ruler, but the ruler is not bound by any obligation towards them.
He supported an all-powerful, indivisible and absolute authority.

3️⃣ John Locke

Locke considered the state of nature to be peaceful but lacking security.
To protect life, liberty and property, individuals enter into a social contract and establish a government.
The government is responsible and accountable to the people, and if it violates natural rights, the people have the right to revolt and replace it.
Locke supported **limited government, constitutionalism and rule of law** rather than absolutism.

4️⃣ Jean Jacques Rousseau

Rousseau famously stated, "Man is born free, but everywhere he is in chains."
He advocated **direct popular sovereignty and the theory of General Will**, according to which laws must reflect the collective will of the people, not the personal will of any ruler.

Rousseau is considered the philosophical foundation of modern democracy, equality and participative governance.

✨ Conclusion

Social Contract Theory forms the philosophical foundation of modern constitutional democracy, popular sovereignty, responsible government and the rule of law.
It establishes that state power originates not from divine authority or force, but from the **consent of individuals**, and that the people remain the ultimate source of political legitimacy.

**********==========**********

2 Question: Command theory (Austin)?

📌 Command Theory (John Austin)

✨ Introduction

John Austin is a major proponent of **Legal Positivism**. He separated law from morality, religion and natural justice and attempted to define law in a purely scientific manner. According to Austin, the foundation of law is **the command of the sovereign backed by sanction**.

📌 Austin's Definition of Law

Austin defined law as:
"Law is the command of the sovereign, backed by sanction."

For him, law is not what ought to be morally just, but what is laid down by the legitimate political authority.

1️⃣ Command

According to Austin, every law is essentially a command issued by the sovereign.
A command contains three essential components:

- **Command**
- **Duty**
- **Sanction**

A directive becomes law only when failure to obey it results in punishment.

2️⃣ Sovereignty

Austin defines sovereignty as:

- The person or body whose directions are habitually obeyed by the majority of society,
- And who is not legally bound to obey any other superior authority.

The sovereign's will is final, supreme and legally binding.

3️⃣ Duty

Once a command is issued by the sovereign, obedience becomes a **legal duty** for the subjects.
If a person fails to fulfil this duty, he becomes liable for punishment.

4️⃣ Sanction

For Austin, sanction is an indispensable element of law.
Without the threat of penalty, a command cannot be considered law.
Sanction is the coercive force which ensures compliance.

5️⃣ Separation of Law and Morality

Austin made a clear distinction between:

- **What Law *is*** (as a command of the sovereign), and
- **What Law *ought to be*** (morally desirable).

Thus, the validity of law depends not on its moral value but on the authority that imposes it.

✨ Criticism of Austin's Theory

Austin's Command Theory has been criticized on several grounds:

1. **Ignores Democratic Reality**
   He considers the sovereign absolute, whereas modern states function on constitutional and democratic principles.
2. **Neglect of Judicial Law-Making**
   Judge-made law and precedents are valid sources of law, but Austin does not recognize them as true law.
3. **Inconsistent with Modern Constitutionalism**
   In a constitutional setup, even the sovereign is bound by the Constitution, something Austin failed to acknowledge.
4. **Weak Explanation of International Law**
   International law, though lacking strict sanctions, is widely recognized as law, which contradicts Austin's sanction-based definition.

✨ Conclusion

Austin's Command Theory is a cornerstone of legal positivism. It provided a clear and scientific definition of law as an enforceable command distinct from morality. Although modern constitutional

democracies operate not under a single unlimited sovereign but under distributed authority, Austin's theory remains foundational in understanding the binding character, authority and enforceability of law.

**********==========**********

3 Question: Pure theory of law & Normative Science (Kelson)?

📌 **Pure Theory of Law & Normative Science (Hans Kelsen)**

20 Marks Ideal Answer (In English Only)

✨ **Introduction**

Hans Kelsen is regarded as one of the most influential figures in modern legal positivism. He separated law completely from morality, sociology, psychology, politics and religion, and attempted to establish a **scientific and autonomous theory of law**, which he termed as the **Pure Theory of Law**. Kelsen's central aim was that law should be understood **as law itself**, and not evaluated on the basis of justice, ethics or moral values.

📌 **1. Basis of Pure Theory of Law**

According to Kelsen:

- Law must be studied strictly as a system of **legal norms**
- The analysis of law must be free from moral, social and political considerations
- Law is **a normative science**, not a descriptive or moral science

Thus, law deals with **"what law is"** and not **"what law ought to be."**

📌 **2. Normative Science**

Kelsen described law as a **Normative Science**.

- Norms are binding legal standards prescribing **duties and compliance**
- Law is a structured system of norms, and each norm derives validity from a superior norm

Hence, law is a hierarchical normative order, backed by sanctions.

📌 **3. Grundnorm (Basic Norm)**

The most important concept in Kelsen's theory is **Grundnorm** or **Basic Norm**.

- It is the **supreme foundational norm** from which all other legal norms derive validity
- The Constitution represents this basic norm

- Grundnorm itself is not validated by any higher authority, but it provides legitimacy to all other rules within the legal system

Thus, the entire legal structure rests upon a **single ultimate norm**.

📌 4. Hierarchy of Norms (Pyramid Structure)

Kelsen visualized law as a **pyramid of norms**:

1. **Grundnorm / Constitution**
2. **Legislative Norms (Statutes / Acts)**
3. **Executive Norms (Rules / Regulations)**
4. **Judicial Norms (Judgments / Precedents)**
5. **Administrative / Subordinate Legislation**

Every lower norm derives its validity from a higher norm.

📌 5. Separation of Law and Morality

Like Austin, Kelsen also strictly separated law from morality.

- **Law = Valid Norms enforced by authority**
- **Morality = Value-based conduct**

Law does not depend on ethical standards; its validity depends only on its **legal source**.

📌 6. Importance of Sanction

For Kelsen, sanction is an essential element of law.

- Each legal norm is backed by a coercive force
- When a rule is violated, punitive consequences follow
- This coercive element makes legal norms binding and enforceable

---

✨ Criticism of Kelsen's Theory

1. **Excessive Legal Abstraction**
   Social realities, ethical needs and political context are ignored.
2. **Ambiguity of Grundnorm**
   How the Grundnorm originates is never clearly explained.
3. **Lack of Practical Basis**
   Modern democratic values, social justice and welfare aspects are absent.

4. **Neglect of Justice and Morality**
   Law is not merely a technical order but also a tool for social justice and fairness.

✨ **Conclusion**

Kelsen's Pure Theory of Law occupies a significant place in modern jurisprudence.
It provided a **scientific, logical and value-free analysis** of law by treating law solely as a normative order.
Despite criticisms for ignoring sociological and moral dimensions, Kelsen succeeded in establishing law as an autonomous discipline, distinct from political, moral and religious influences.

**********==========**********

4 Question: Pain & pleasure theory (Bentham)?

Introduction

Jeremy Bentham, an eminent English philosopher and jurist, is known as the founding father of **Utilitarianism**. His moral and legal philosophy is based on the principle that human actions are guided by **pain and pleasure**. According to Bentham, nature has placed mankind under the governance of two sovereign masters — **Pain and Pleasure**. All human behaviour, morality, and law must be evaluated on the basis of the happiness they bring and the suffering they avoid.

Concept of Pain and Pleasure

Bentham argues that every human action is motivated by the desire to obtain **pleasure** and avoid **pain**. These two forces determine what individuals choose and how society functions. Thus, pleasure is the ultimate aim and pain is the ultimate deterrent. Any law or policy, to be valid, must promote the maximum pleasure and reduce pain for the maximum number of people.

Utilitarian Formula – Greatest Happiness Principle

Bentham developed the famous formula:
"The greatest happiness of the greatest number."
This means that the legitimacy of a law or moral act depends on how much happiness it generates for society at large. Laws must serve collective well-being, not the interest of a few individuals.

Hedonic Calculus

To measure pleasure and pain, Bentham introduced the **Hedonic Calculus**, which assesses:

- **Intensity** (degree of pleasure or pain)
- **Duration** (how long it lasts)
- **Certainty/Uncertainty**
- **Propinquity** (how soon it will occur)

- **Fecundity** (chances of producing more pleasure)
- **Purity** (absence of pain)
- **Extent** (number of persons affected)

This systematic measurement helps lawmakers create rational laws based on quantifiable social benefit.

Relation to Law and Governance

Bentham rejected natural law and supported **legal positivism**, holding that laws must be judged by their utility rather than morality or tradition. A good law is one that:

- Prevents pain (crime, disorder)
- Promotes pleasure (welfare, liberty, security)
  Thus, law is an instrument of social happiness.

Criticism

Bentham is criticized for reducing human emotions to mathematical calculations and ignoring qualitative differences between pleasures. Critics argue that higher moral and intellectual pleasures cannot be equated with physical pleasure. John Stuart Mill later refined Bentham's idea by differentiating between higher and lower pleasures.

Conclusion

Bentham's Pain and Pleasure Theory forms the foundation of modern **utilitarian jurisprudence**. His emphasis on welfare, happiness, measurable morality, and legislative reform significantly influenced democratic systems, policy-making, and penal reforms worldwide. For Bentham, human life revolves around avoiding pain and seeking pleasure, and all laws must ultimately aim to maximize collective happiness.

**********==========**********

5 Question: Living law theory (Ehrlich)?

Introduction

Eugen Ehrlich, a renowned German sociological jurist, is considered the chief architect of the **Sociological School of Jurisprudence**. He introduced the concept of **Living Law**, which states that real law is not found primarily in legislation or judicial decisions but in the **social life, customs, associations, and daily behaviour of people**. Ehrlich emphasized that the true source of law is society itself, not merely the state.

Meaning of Living Law

According to Ehrlich, law is a **living social order** that evolves from the day-to-day interactions of individuals within society. This law exists before and beyond codification by the state.
Thus, **"law grows in society and is later recognized by the state."**
Living law includes:

- Customs
- Social norms
- Morality
- Family and community rules
  These regulate human conduct even without state enforcement.

Key Principles

1. **Society as the Primary Source of Law**
   Ehrlich argues that the foundation of law lies in social groups, customs, institutions, economic relations, and moral principles prevailing in society.
2. **Distinction Between Law and State**
   The state merely **codifies** and enforces laws, while their **origin** lies in social life. Hence, law precedes the state and exists independently of state sanctions.
3. **Social Control Mechanism**
   Individuals follow norms not only due to fear of legal punishment but mainly due to **social acceptance or rejection**.
   Social pressure ensures compliance — this is the essence of living law.
4. **Limited Role of Courts**
   Courts merely **apply and interpret** laws; they do not create them.
   Judiciary recognizes norms only after they are already established in society.

Illustrations

- Marriage, inheritance, caste rules, and trade practices existed as **social norms long before** they were codified by formal legislation.
- Village panchayats, guild rules, community sanctions, khap decisions, and customary practices function as **living law**, because they regulate conduct even without state intervention.

Criticism

- Ehrlich is criticized for **underestimating the authority of the state**, as state law ultimately holds coercive power.
- Critics claim that blind reliance on customs may validate social evils such as caste discrimination, untouchability, or gender inequality.

- Law must also reflect **justice, equality, and human rights**, not merely social practice.

Conclusion

Ehrlich's Living Law Theory presents law as a **dynamic, organic, and socially rooted** institution. It highlights that law lives within society and changes alongside social development. The theory has greatly influenced modern legal sociology, legal pluralism, and the idea that **law is effective only when it reflects the living conscience of society**.
Thus, real law is not confined to statutes and judicial records but thrives in the **actual life of the people**.

**********==========**********

6 Question: Social engineering (Rosco pound)?

Introduction

Roscoe Pound, a leading American jurist of the Sociological School, introduced the concept of **Social Engineering**. According to him, society is a complex structure where various **conflicting interests** operate simultaneously. The main function of law is to balance and harmonize these interests to ensure **social order, justice, and stability**.

Meaning of Social Engineering

Pound compares society to an **engineering mechanism** where law acts like an engineer. Law must **adjust, control, and distribute social resources and opportunities** in a fair manner.
Hence, the purpose of law is not merely punishment, command, or abstract justice, but **the scientific management of social interests**.

Pound states that:

- Law must secure maximum **justice with minimum social friction**.
- Law becomes an instrument to create a peaceful, progressive, and balanced social system.

Classification of Interests

Pound classified social interests into three categories:

1. **Individual Interests**
    - Right to life, liberty, reputation, property, health, personality, family relations.
2. **Public or Social Interests**
    - Public safety, morality, social peace, public convenience, environment, economic stability.
3. **State Interests**

- Preservation of the state, administration of justice, collection of revenue, public order.

Purpose of law: to bring **equilibrium** among these three sets of interests.

Process of Social Engineering

According to Pound, law must function like a **balancing mechanism**:

- Resolve conflicts scientifically
- Protect individual liberty while maintaining social control
- Ensure justice without disturbing social order
- Promote welfare while avoiding oppression
- Harmonize competing interests through pragmatic legal solutions

Law is successful when it **reduces conflict** and **promotes cooperation** in society.

Illustrations

- **Traffic regulations** limit individual freedom but ensure public safety.
- **Labour laws** protect workers while allowing industrial growth.
- **Child marriage prohibition, dowry laws, environmental laws, domestic violence laws** show law balancing social reform with individual concerns.

Criticism

- Pound assumes that society can be smoothly balanced, whereas in reality, society is dynamic and deeply unequal.
- Interests cannot always be neatly classified.
- Critics argue that the theory focuses on **adjustment** of interests rather than **eradication of social injustice**.

Conclusion

Roscoe Pound's theory views law as a **creative social tool**, not merely a command of the sovereign or a set of court decisions. Law should minimize conflict and maximize social cooperation by **scientifically balancing competing interests**.
Thus, Social Engineering laid the foundation for modern social legislation, judicial activism, legal reforms, and welfare jurisprudence by redefining law as a means to achieve **ordered progress and social harmony**.

**********==========**********

7 Question: Volkegist theory (Savigny)?

Introduction

Friedrich Karl von Savigny, the chief exponent of the Historical School of Jurisprudence, propounded the **Volkgeist (Volksgeist) Theory**. According to him, **law is not created by any ruler, legislature, or individual thinker**, but it **evolves organically from the spirit of the people**—their history, customs, traditions, culture, beliefs, and social practices. Law is thus a product of the **collective consciousness of a nation**.

Meaning of Volkgeist

The term **Volkgeist** is composed of:

- **Volk** = People/Nation
- **Geist** = Spirit/Soul

Thus, **Volkgeist means national spirit or collective consciousness**.

Savigny argued that just as **language, art, religion, and customs** grow naturally with the life of the people, **law also originates and develops spontaneously** from within society. It is not an artificial creation imposed from outside, but **a reflection of the internal life of the community**.

Key Features of the Theory

1. **Law Originates from Society**
   Law is the outcome of social traditions and collective experiences, not the command of a lawmaker.
   Savigny believed: **"Custom precedes codification."**
2. **Gradual Development of Law**
   Law is not made in a moment; it evolves **slowly and historically** over generations. Social growth and legal growth go hand in hand.
3. **Opposition to Codification**
   Savigny opposed **hasty codification** of law. He argued that when society is not mature, codification **freezes legal development** and hampers natural evolution.
4. **Limited Role of Legislation**
   The legislature does not create law; it merely **recognizes and records** those customs that have already gained social acceptance.

Impact of Volkgeist Theory

- Customs became recognized as an important source of law.
- Cultural and historical identity of nations was emphasized.
- Provided foundation for the later scientific codification of German law.

- Strengthened the idea that law must be rooted in **national character and heritage**.

Criticism

- The theory gives **excessive importance to customs and traditions**, which may make legal reforms slow.
- Blind dependence on customs can justify **superstitions, social inequality, caste practices, and discrimination**.
- In modern fast-changing societies, relying solely on tradition is impractical and restrictive.

Conclusion

Savigny's Volkgeist theory presents law as the **natural product of national spirit, cultural evolution, and historical consciousness**. Law is not an imposed command but the **organic expression of people's collective life**.
Though criticized for resisting rapid reform, the theory remains significant for recognizing the role of **history, culture, customs, and social evolution** in the development of law.

**********==========**********

**********==========**********

8 Question: Status to Contract (Henary Maine),

1. Introduction

Henry Sumner Maine, a renowned historical jurist, presented his famous thesis that **"the movement of progressive societies has hitherto been a movement from Status to Contract."**
This theory explains the transformation of societies from rigid, birth-based relations to freedom-based, voluntary agreements.

---

2. Meaning of Status

In ancient societies, social relations were governed by **status**, meaning:

- Individual position was decided by **birth, caste, religion, kinship, family**.
- No personal freedom to choose occupation, marriage, or property.
- Rights and duties were **fixed and predetermined** by traditional social order.

Example:

- A person born in a particular caste had to follow its profession, customs, and duties.

---

3. Meaning of Contract

As society progressed, the role of individual will and consent increased.
Contract signifies:

- Relations created by **free choice and mutual agreement**.
- Individuals can decide their rights, duties, occupation, marriage, property matters, and trade freely.
- Social identity is no longer pre-fixed but **self-determined**.

---

4. Transition from Status to Contract

Maine explains that historical development shows:

- **Ancient society = family-based, rigid, patriarchal**
- **Modern society = individual-based, flexible, and contractual**

Shift involves:

1. **Decline of family control**
2. **Emergence of individual liberty**
3. **Freedom to negotiate legal relations**
4. **Rise of commercial and capitalist systems**
5. **Codification of laws ensuring equal rights**

---

5. Role in Legal Development

- Law moved from **customary, religious, and family norms** to **secular legislation**.
- Personal rights began to be defined not by birth but by **legal agreements and contracts**.
- It encouraged **freedom of trade, labour mobility, property rights, and market expansion**.

---

6. Criticism

- Modern welfare states have reintroduced **status elements** (e.g., reservation, labour protection, social security).
- Complete liberty of contract is not realistic due to **economic inequality**.
- In many societies, caste and family norms still influence personal relations.

---

7. Conclusion

Maine's theory symbolizes the transformation of law and society from **traditional status-bound identities to modern contractual freedom**.
It highlights how human relations evolved from fixed obligations of birth to **rights chosen by free**

will. Despite criticisms, the theory remains a cornerstone of **historical jurisprudence**, explaining social modernization and legal development.

**********==========**********

9 Question: Social Solidarity Theory – Leon Duguit

1. Introduction

Leon Duguit, the eminent French sociological jurist, is known for propounding the **Social Solidarity Theory**.
According to him, the basis of law is neither **sovereignty of the state** nor **individual liberty**, but **social solidarity and collective welfare**. Society exists because of cooperation, and law functions to maintain this cooperative balance.

---

2. Meaning of Social Solidarity

Duguit states that society runs smoothly when every individual recognizes **mutual dependence (interdependence)** and contributes to collective harmony.
Social solidarity means:

- Every person is dependent upon others
- Collective interest is superior to individual benefit
- Harmony, cooperation, and social balance must be preserved

---

3. Core Principles of the Theory

a. Social Welfare is Supreme

Duguit emphasizes that the real foundation of law is **social welfare, not individual supremacy**.
An individual alone is powerless; he becomes meaningful only within society.

b. Denial of Sovereignty

Duguit **rejects the concept of sovereignty**.
No ruler, state, or institution is supreme.
All authorities exist only to serve **social needs and welfare**.

c. Law as Social Regulation

Law does not originate from the will of a sovereign but from **social necessity and moral unity**.
Rules become law only when accepted by society to maintain solidarity.

d. Duty-Centred Approach

Duguit gives priority to **duties over rights**.
If every person performs his social duties, **rights automatically get fulfilled**.

---

4. Definition of Law (According to Duguit)

Law is a set of rules:

- framed for maintaining **social solidarity**
- and protecting **collective welfare**.

It is not a command but a **socially accepted order** necessary for cooperation.

---

5. Importance of Social Interdependence

Duguit highlights that:

- members of society are **economically, morally, and socially dependent** on each other
- this mutual dependence forms the basis of **law, morality, and social discipline**

---

6. Criticism

- Denial of sovereignty is considered unrealistic in modern constitutional states.
- Overemphasis on duties may **dilute individual rights and freedoms**.
- Social solidarity alone cannot explain the complex nature of modern pluralistic societies.

---

7. Conclusion

Leon Duguit's Social Solidarity Theory shifts the foundation of law from **command of the sovereign** to **collective welfare and social cooperation**.
He establishes that law is essentially a tool of **social balance, mutual assistance, and moral unity**, not a mere instrument of power.

This theory significantly contributed to **sociological jurisprudence**, emphasizing that law grows out of the **needs of society and cooperation among its members**.

**********==========**********

10 Question: Types of law?

1. Introduction

Law is an instrument of **justice, order, discipline, and social control**.
To regulate human conduct, protect rights, impose duties, and maintain peace in society, different types of laws have been developed.
The classification of law is based on social, political, moral, and legal necessities.

---

2. Main Types of Law

(1) Natural Law

- Based on **morality, reason, and human conscience**.

- Universal, eternal, and inherent principles of justice and human rights.
- Examples: liberty, equality, right to life.

(2) Positive Law / State-made Law

- Law **created and enforced by the State**.
- Includes legislation, statutes, judicial decisions, and codified rules.
- Backed by **sanction and authority** of the State.

(3) Divine / Religious Law

- Based on **religious doctrines and sacred texts**.
- Examples: Manusmriti, Quranic Law, Biblical Law, and rules in Guru Granth Sahib.

(4) Customary Law

- Based on **tradition, social practices, and long-standing customs**.
- Traditional family systems, inheritance norms, tribal customs fall in this category.

(5) Constitutional Law

- The **supreme law of the land**.
- Regulates structure of the State, division of powers, fundamental rights, and governance.
- No law can violate the Constitution.

(6) Criminal Law

- Deals with **offences, punishments, prohibitions, and public safety**.
- Objective: protection of society and maintenance of public order.

(7) Civil Law

- Governs **private disputes**, property matters, contract, inheritance, marriage, and family relations.
- Aim: **compensation and protection of rights**, not punishment.

(8) Administrative Law

- Regulates **powers, functions, and procedures** of administrative authorities.
- Ensures fairness, accountability, and prevents misuse of administrative powers.

(9) International Law

- Governs relations between **sovereign States**.
- Includes treaties, diplomacy, war and peace regulations, UN conventions, and international agreements.

(10) Public Law

- Controls relationship between **State and citizens**.

- State interest and public welfare remain primary.

(11) Private Law

- Regulates **interpersonal relations between individuals**.
- Includes contract law, family law, succession, and property matters.

---

3. Importance of Law

- Establishes **justice, stability, and social order**.
- Protects rights and freedoms of individuals.
- Provides mechanisms for dispute resolution.
- Controls crime and safeguards public welfare.

---

4. Conclusion

Different types of law are shaped according to **social, moral, religious, economic, and political needs** of society.
From natural law to constitutional and international law, every branch of law collectively ensures **peace, security, justice, order, and social welfare**.
Thus, the classification of law reflects the **evolution of legal thought and the complexity of modern social life**.

**********==========**********

11 Question: definitions of Jurisprudence?

1. Introduction

Jurisprudence is the **philosophical and theoretical study of law** in its widest sense.
It explains the **origin, nature, purpose, structure, and principles** of law.
In other words, jurisprudence examines law not merely as a set of rules but as a **system of values, justice, and social control**.

---

2. Definitions by Eminent Jurists

(1) Salmond

According to Salmond:
"Jurisprudence is the science of the first principles of civil law."
Meaning, it is the systematic and scientific study of the foundational principles of law.

---

(2) Austin

Austin defined jurisprudence as:
"The philosophy of positive law."
It deals with state-made law i.e., the commands issued by the sovereign backed by sanctions.

---

(3) Kelsen

According to Hans Kelsen:
"Jurisprudence is the pure theory of law which studies only legal norms."
He separated law from morality, society, psychology, and politics, focusing strictly on legal norms.

---

(4) Holland

Holland defined jurisprudence as:
"The formal science of positive law."
He emphasized the analytical and structural study of law.

---

(5) Duguit

Duguit stated:
"Jurisprudence explains the principles of social solidarity and collective welfare."
For him, law is grounded in social interdependence, not in sovereign will.

---

(6) Roscoe Pound

According to Pound:
"Jurisprudence is the engineering of social interests."
He viewed law as a mechanism of **social engineering**, balancing competing interests for social order.

---

(7) Aristotle

Aristotle defined jurisprudence as:
"The science of what is just and unjust."
It aims to understand fairness and legal justice.

---

3. Importance of Jurisprudence

- Provides philosophical foundation for law
- Helps understand **justice, rights, duties, and legal reasoning**
- Guides judges in interpretation and application of law
- Supports lawmakers in **rational and coherent law-making**
- Develops **logical and analytical thinking** about legal concepts

4. Conclusion

Jurisprudence is more than a study of legal rules; it is a **deep inquiry into the essence, objective, and ideals of law**.
Though defined differently by various jurists, all definitions converge on one point—**jurisprudence seeks to explain law in its most fundamental and rational form**.
Thus, it remains the backbone of legal theory, shaping legal systems and advancing the philosophy of justice.

**********==========**********